

# दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ सत्रह

शीघ्र आने वाले रविवार-संबंधी कानून का अनावरण: पलायन के संकेत का प्रतिरूपात्मक विश्लेषण

Jeff Pippenger

2024-03-05

बहन वाइट शीघ्र आने वाले रविवार के कानून को "संकेत" के रूप में पहचानती हैं, जिसका प्रतिरूप सन् 66 में रोम की सेनाओं द्वारा यरूशलेम को घेर लेने से प्रस्तुत किया गया था, और ऐसा करते हुए वह ऐसे वर्ग की पहचान करती हैं जिनकी आंखें हैं पर देखते नहीं, और कान हैं पर सुनते नहीं।

अनंतता हमारे सामने पसरी हुई है। पर्दा उठने ही वाला है। हम जो इस गंभीर, जिम्मेदार स्थिति में हैं, हम क्या कर रहे हैं, किस बात पर विचार कर रहे हैं, कि हम अपनी स्वार्थी आराम-प्रियता से चिपके हुए हैं, जबकि हमारे चारों ओर आत्माएँ नाश हो रही हैं? क्या हमारे हृदय पूरी तरह संवेदनहीन हो गए हैं? क्या हम यह महसूस या समझ नहीं सकते कि दूसरों के उद्धार के लिए हमें एक कार्य करना है? भाइयो, क्या आप उन लोगों में से हैं जिनकी आँखें होते हुए भी देखते नहीं, और कान होते हुए भी सुनते नहीं? क्या व्यर्थ ही परमेश्वर ने आपको अपनी इच्छा का ज्ञान दिया है? क्या व्यर्थ ही उसने आपको चेतावनी पर चेतावनी भेजी है? क्या आप पृथ्वी पर जो आने वाला है उसके विषय में शाश्वत सत्य की घोषणाओं पर विश्वास करते हैं, क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर के न्याय लोगों पर मंडरा रहे हैं, और क्या तब भी आप निश्चित, आलसी, लापरवाह, सुख-भोगी बने बैठे रह सकते हैं?

"अब परमेश्वर की प्रजा के लिए यह समय नहीं है कि वे अपनी आसक्तियाँ संसार में लगाएँ या अपना धन-संचय यहीं करें। वह समय दूर नहीं, जब प्रारम्भिक चेलों के समान हमें भी उजाड़ और एकांत स्थानों में शरण ढूँढने के लिए विवश होना पड़ेगा। जैसे रोमी सेनाओं द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी यहूदिया के मसीहियों के लिए पलायन का संकेत थी, वैसे ही हमारे राष्ट्र द्वारा पोपीय सब्त को लागू करने वाली आज्ञा में सत्ता ग्रहण करना हमारे लिए चेतावनी होगा। तब बड़े नगरों को छोड़ने का समय होगा, इस तैयारी के साथ कि छोटे नगरों को भी छोड़कर पर्वतों के बीच एकांत स्थानों में स्थित निर्जन घरों में चला जाए।" Testimonies, volume 5, 464.

संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाला रविवार का कानून चेतावनी संकेत (चिन्ह) है, 'बड़े शहरों को छोड़ देने का, और पहाड़ों के बीच एकांत स्थानों में स्थित एकांत निवासों के लिए छोटे शहरों को छोड़ने की तैयारी करने का।' लाओदिकियाई एडवेंटवाद अधिकांशतः इस बात से अनभिज्ञ है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार कानून का संकेत द ग्रेट कंट्रोवर्सी में उल्लिखित 'चिन्ह' को पूरा करता है। यह साढ़े तीन वर्षों की शुरुआत में दिए गए 'चिन्ह' द्वारा प्रतीकित है। वह 'चिन्ह', जो सन् 66 ईस्वी में घटित यरूशलेम की पहली घेराबंदी में पूरा हुआ था, निकट आने वाले रविवार कानून पर फहराए जाने वाले 'ध्वज' का प्रतिरूप है।

यरूशलेम का वास्तविक विनाश ईस्वी सन् 70 में टाइटस के द्वारा संपन्न हुआ था, और टाइटस की घेराबंदी का पूर्वचित्रण ईस्वी सन् 66 में सेस्टियस की घेराबंदी में हुआ था, क्योंकि यीशु सदैव किसी बात का अंत उसकी शुरुआत से दर्शाते हैं। भागने के लिए यीशु द्वारा दिया गया "चिन्ह" सेस्टियस की वह प्रारंभिक घेराबंदी थी, न कि टाइटस की घेराबंदी। एक आरंभ की घेराबंदी थी, दूसरी अंत की घेराबंदी।

"यरूशलेम के विनाश में एक भी मसीही ने प्राण नहीं गंवाया। मसीह ने अपने चेलों को चेतावनी दे दी थी, और जिन्होंने भी उनके वचनों पर विश्वास किया, वे प्रतिज्ञात चिन्ह की प्रतीक्षा करते रहे। 'जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घेरा हुआ देखोगे,' यीशु ने कहा, 'तो जान लेना कि उसका उजाड़ निकट है। तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों की ओर भाग जाएँ; और जो उसके बीच में हों वे उससे बाहर निकल जाएँ।' लूका 21:20, 21। सेस्टियस के अधीन रोमियों ने नगर को घेर लेने के बाद, जब सब कुछ तत्काल आक्रमण के अनुकूल प्रतीत हो रहा था, तो उन्होंने अप्रत्याशित रूप से घेरा छोड़ दिया। घिरे हुए लोग सफल प्रतिरोध की आशा छोड़कर आत्मसमर्पण करने ही वाले थे, तभी रोमी सेनापति ने बिना किसी स्पष्ट कारण के अपनी सेनाएँ वापस बुला लीं। परंतु परमेश्वर के

करुणामय प्रबन्ध अपने लोगों की भलाई के लिए घटनाओं को दिशा दे रहे थे। प्रतीक्षा कर रहे मसीहियों को प्रतिज्ञात चिन्ह दे दिया गया था, और अब जो कोई चाहे, उनके लिए उद्धारकर्ता की चेतावनी का पालन करने का अवसर उपलब्ध था। घटनाएँ इस प्रकार संचालित की गईं कि न यहूदी और न ही रोमी मसीहियों के पलायन में बाधा डाल सकें। सेस्टियस के पीछे हटते ही, यहूदी यरूशलेम से निकलकर उसकी लौटती हुई सेना के पीछे पड़ गए; और जब दोनों सेनाएँ इसी में व्यस्त थीं, तब मसीहियों को नगर छोड़ने का अवसर मिल गया। इसी समय देश भी उन शत्रुओं से खाली हो गया था जो उन्हें रोकने का प्रयास कर सकते थे। घेराबंदी के समय, यहूदी तंबुओं के पर्व को मानने के लिए यरूशलेम में इकट्ठे थे, और इस प्रकार देशभर के मसीही बिना रोक-टोक निकल भागने में सक्षम हुए। वे बिना विलंब एक सुरक्षित स्थान पर भाग गए—यर्दन के पार, पेरेआ देश में स्थित पेल्ला नगर में।" महान संघर्ष, 30.

सन् 66 में केस्टियस द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी ने वह चेतावनी का 'संकेत' पूरा किया जो मसीह ने उस समय के ईसाइयों के लिए दर्ज किया था, लेकिन 70 ईस्वी में टाइटस की घेराबंदी ने भागने का कोई 'संकेत' नहीं दिया। उस घेराबंदी में शहर में कोई ईसाई शेष नहीं था, और उसी अंतिम घेराबंदी से यरूशलेम का विनाश हुआ, और यरूशलेम के विनाश में 'एक भी ईसाई मारा नहीं गया,' क्योंकि ईसाई घटनाक्रम की शुरुआत में ही भाग चुके थे।

सेस्टियस और उसकी सेना का पीछा करते हुए यहूदी बलों ने उनके पिछले दल पर ऐसी प्रचंडता से धावा बोला कि उनके पूर्ण विनाश का भय उत्पन्न हो गया। बड़ी कठिनाई से रोमन पीछे हटने में सफल हो पाए। यहूदी लगभग बिना किसी हानि के बच निकले और अपनी लूट के साथ विजयोत्सास में यरूशलेम लौट आए। फिर भी इस प्रतीत होती सफलता ने उन्हें केवल अनिष्ट ही दिया। इसने उनमें रोमनों के प्रति ऐसे हठी प्रतिरोध की भावना भर दी, जिसने शीघ्र ही उस अभिशप्त नगर पर अकथनीय विपत्ति ला दी।

"जब टाइटस ने घेराबंदी पुनः प्रारंभ की, तो यरूशलेम पर भयंकर विपत्तियाँ टूट पड़ीं। फसह पर्व के समय शहर को चारों ओर से घेर लिया गया, जब लाखों यहूदी उसकी प्राचीरों के भीतर एकत्र थे।" महान विवाद, 31.

सन् 66 में झोंपड़ियों के पर्व से सन् 70 में फसह तक साढ़े तीन वर्ष होते हैं, जो भविष्यवाणी के अनुसार बारह सौ साठ दिनों के समान हैं। सन् 66 से सन् 70 तक मूर्तिपूजक रोम ने पवित्रस्थान और सेना को रौंदा, जैसे कि पोप-शासित रोम ने सन् 538 से 1798 तक बयालीस महीनों के लिए पवित्र नगर को रौंदा।

परन्तु मंदिर के बाहर का जो आँगन है, उसे छोड़ दे, और उसे न नाप; क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है; और पवित्र नगर को वे बयालिस महीनों तक पांव तले रौंदेंगे। प्रकाशितवाक्य 11:2.

मूर्तिपूजक रोम और पापाई रोम, दोनों ने बारह सौ साठ दिनों (वर्षों) तक यरूशलेम को रौंदा, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक रोम अंतिम दिनों के आध्यात्मिक यरूशलेम को बारह सौ साठ दिनों की प्रतीकात्मक अवधि के लिए रौंदेगा। वह प्रतीकात्मक अवधि संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार क़ानून के साथ, जब घातक घाव भर जाएगा, आरंभ होगी।

और मैंने उसके सिरों में से एक को मानो घातक रूप से घायल देखा; और उसका घातक घाव चंगा हो गया; और सारी पृथ्वी उस पशु के पीछे अचम्भा करती हुई चली। और उन्होंने उस अजगर की आराधना की, जिसने उस पशु को सामर्थ्य दी थी; और उन्होंने उस पशु की भी आराधना की, यह कहते हुए, "उस पशु के समान कौन है? और कौन है जो उसके साथ युद्ध कर सके?" और उसे बड़े-बड़े शब्द और ईशानिन्दा की बातें बोलने वाला एक मुख दिया गया; और उसे बयालीस महीने तक कार्य करते रहने की सामर्थ्य दी गई। प्रकाशितवाक्य 13:3-5.

पापसी उत्पीड़न के प्रतीकात्मक बयालीस महीनों का समय, रविवार के कानून के संकट की "घड़ी" है। वह "घड़ी" एक "चिन्ह" (ध्वज) से आरंभ होती है और "चिन्हों" पर समाप्त होती है। रविवार के कानून के समय प्रकट होने वाले उस ध्वज का "चिन्ह" जो भी मसीही अभी भी बाबुल में हैं, उन्हें अन्य पहाड़ियों से ऊपर उन्नत (ऊँचा उठाया गया) उस महिमामय पवित्र पर्वत की ओर भाग निकलने के लिए प्रेरित करेगा।

और ऐसा होगा कि अंतिम दिनों में यहोवा के भवन का पर्वत पर्वतों की चोटी पर स्थापित किया जाएगा, और वह पहाड़ियों से ऊपर ऊँचा किया जाएगा; और सब जातियाँ उसकी ओर बहेंगी। और बहुत से लोग आएँगे और कहेंगे, 'आओ, हम यहोवा के पर्वत पर, याकूब के परमेश्वर के भवन में चलें; वह हमें अपनी राहें सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे,' क्योंकि सिष्योन से व्यवस्था निकलेगी, और यरूशलेम से यहोवा का वचन। यशायाह 2:2, 3.

रविवार की उपासना लागू करने वाले फरमान के समय शहरों से हुए पलायन की मिसाल वर्ष 66 में ईसाइयों के पलायन और वर्ष 538 में कलीसिया के मरुभूमि में भाग जाने, दोनों में मिलती है।

और वह स्त्री मरुभूमि में भाग गई, जहाँ उसके लिये परमेश्वर ने एक स्थान तैयार किया था, ताकि वहाँ उसका एक हजार दो सौ साठ दिनों तक पालन-पोषण किया जाए। प्रकाशितवाक्य 12:6.

यरूशलेम का विनाश पहली घेराबंदी से अंतिम घेराबंदी तक साढ़े तीन वर्ष तक चला, लेकिन आने वाले विनाश का चेतावनी संदेश सात वर्षों तक दिया गया—पहली घेराबंदी से साढ़े तीन वर्ष पहले और साढ़े तीन वर्ष बाद।

यरूशलेम के विनाश के विषय में मसीह द्वारा दी गई सभी भविष्यवाणियाँ शब्दशः पूरी हुईं। यहूदियों ने उनकी चेतावनी के वचनों की सच्चाई का अनुभव किया: 'जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हें फिर नापा जाएगा।' मत्ती 7:2.

संकेत और चमत्कार प्रकट हुए, जो विपत्ति और विनाश का पूर्वाभास कर रहे थे। रात के बीचोंबीच मंदिर और वेदी के ऊपर एक अप्राकृतिक प्रकाश चमका। सूर्यास्त के समय बादलों पर रथों और योद्धाओं की छवियाँ उभर आईं, जो युद्ध के लिए एकत्र हो रहे थे। पवित्र स्थान में रात को सेवा करने वाले याजक रहस्यमय ध्वनियों से भयभीत हो गए; पृथ्वी काँप उठी, और अनेक स्वरों को यह पुकारते सुना गया: 'चलो, यहाँ से निकल चलें।' महान पूर्वी फाटक, जो इतना भारी था कि बीस आदमी भी उसे मुश्किल से बंद कर पाते, और जिसे ठोस पत्थर की फर्श में गहरे धँसाई गई लोहे की विशाल सलाखों से जकड़ा गया था, आधी रात को बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के खुल गया। — मिलमैन, 'यहूदियों का इतिहास', पुस्तक 13.

सात वर्षों तक एक व्यक्ति यरूशलेम की गलियों में गली-गली घूमता रहा, उस नगर पर आने वाली विपत्तियों की घोषणा करता हुआ। दिन-रात वह यह उग्र शोकगीत गाता रहा: 'पूरब से एक आवाज़! पश्चिम से एक आवाज़! चारों पवनों से एक आवाज़! यरूशलेम के विरुद्ध और मंदिर के विरुद्ध एक आवाज़! दूल्हों और दुल्हनों के विरुद्ध एक आवाज़! सम्पूर्ण प्रजा के विरुद्ध एक आवाज़!' -Ibid. यह विचित्र मनुष्य कैद किया गया और उसे कोड़े लगाए गए, पर उसके होंठों से कोई शिकायत नहीं निकली। अपमान और दुर्व्यवहार का वह बस यही उत्तर देता: 'हाय, हाय यरूशलेम पर!' 'हाय, हाय उसके निवासियों पर!' जिस घेराबंदी की उसने पहले से भविष्यवाणी की थी, उसमें मारे जाने तक उसकी चेतावनी की पुकार थमी नहीं। The Great Controversy, 29, 30.

सन् 70 ईस्वी में वास्तविक यरूशलेम के अंतिम विनाश से पहले 'चिह्न और चमत्कार' प्रकट हुए, जो 'आपदा और सर्वनाश' का संकेत देते थे। चेतावनी देने वाले ये 'चिह्न' पहली घेराबंदी से पहले साढ़े तीन वर्षों तक और फिर विनाश तक ले जाने वाले साढ़े तीन वर्षों के दौरान भी प्रकट होते रहे। आने वाले विनाश की पहचान कराने वाले ये 'चिह्न' (बहुवचन) 'भाग निकलने की चेतावनी देने वाला चिह्न' (एकवचन) नहीं थे, बल्कि अनुग्रहकाल के आसन्न समापन की घोषणा करते थे।

आध्यात्मिक यरूशलेम को 538 से 1798 तक रौंदे जाने के समय, भाग निकलने की चेतावनी का "चिन्ह" वह था जब "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" प्रकट हुई—अर्थात् "अधर्म का मनुष्य" "नाश के पुत्र" के रूप में "प्रकट" हुआ—"जो विरोध करता है और अपने आप को हर उस से ऊँचा उठाता है जिसे परमेश्वर कहा जाता है, या जिसकी आराधना की जाती है; यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में परमेश्वर बनकर बैठता है, अपने आप को यह दिखाते हुए कि वह परमेश्वर है।"

इसलिए जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को, जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता दानिय्येल ने कहा, पवित्र स्थान में खड़ी देखोगे, (जो पढ़े, वह समझे.) मत्ती 24:15.

जब उस इतिहास के ईसाइयों ने उस 'चिह्न' को पहचाना, तो वे बारह सौ साठ वर्षों के लिए निर्जन प्रदेश में भाग गए।

जो विश्वासयोग्य बने रहना चाहते थे, उन्हें उन छल-कपट और घृणित कुप्रथाओं के विरुद्ध दृढ़ बने रहने के लिए प्राणपण से संघर्ष करना पड़ा, जिन्हें पुरोहिती वेशभूषा में छिपाकर कलीसिया में प्रवेश कराया गया था। बाइबल को विश्वास का मानदंड नहीं माना जाता था। धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांत को विधर्म कहा गया, और उसके समर्थकों से घृणा की गई तथा उन्हें बहिष्कृत कर दिया गया।

"दीर्घ और कठोर संघर्ष के बाद, कुछ विश्वासयोग्य लोगों ने यह निर्णय किया कि यदि धर्मत्यागी कलीसिया अब भी अपने को असत्य और मूर्तिपूजा से मुक्त करने से इंकार करती है, तो वे उससे हर प्रकार का संबंध तोड़ देंगे। उन्होंने देखा कि परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए अलग हो जाना बिल्कुल आवश्यक है। वे अपनी ही आत्माओं के लिए घातक त्रुटियों को सहन करने का साहस नहीं करते थे, और ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना नहीं चाहते थे जो उनके बच्चों और उनके बच्चों के बच्चों के विश्वास को संकट में डाल दे। शांति और एकता सुनिश्चित करने के लिए वे परमेश्वर के प्रति निष्ठा के अनुरूप कोई भी रियायत देने को तैयार थे; परंतु उनका मानना था कि सिद्धांत का त्याग करके प्राप्त की गई शांति भी अत्यधिक महंगी पड़ेगी। यदि एकता केवल सत्य और धार्मिकता के समझौते से ही प्राप्त हो सकती है, तो फिर भिन्नता ही सही, और चाहे युद्ध भी हो।" महान संघर्ष, 45.

पापाई उत्पीड़न के बारह सौ साठ वर्षों के अंत के निकट "चिन्ह" (बहुवचन) थे; और जैसे बारह सौ साठ दिनों के अंत में—जब मूर्तिपूजक रोम ने वास्तविक यरूशलेम को रौंदा—जो "चिन्ह" प्रकट हुए थे, वैसे ही वे "चिन्ह" भागने के संकेत नहीं थे।

उद्धारकर्ता अपने आगमन के संकेत देता है, और इससे भी बढ़कर, वह उस समय को निर्धारित करता है जब इन संकेतों में से पहला प्रकट होगा: 'उन्हीं दिनों के क्लेश के तुरंत बाद सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, और चंद्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा, और आकाश से तारे गिरेंगे, और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी; और तब आकाश में मनुष्य के पुत्र का चिन्ह दिखाई देगा; और तब पृथ्वी की सारी जातियाँ शोक मनाएँगी, और वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ आकाश के बादलों पर आते हुए देखेंगी। और वह अपने स्वर्गदूतों को बड़ी तुरही की ध्वनि के साथ भेजेगा, और वे उसके चुने हुए लोगों को चारों दिशाओं से, आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक इकट्ठा करेंगे।'

पोप के द्वारा हुए महान उत्पीड़न के अंत में, मसीह ने घोषित किया कि सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, और चंद्रमा अपना प्रकाश न देगा। इसके बाद, आकाश से तारे गिरेंगे। और वह कहता है, 'अंजीर के पेड़ का यह दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाली अभी कोमल होती है और पत्ते निकलते हैं, तो तुम जानते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है; उसी प्रकार तुम भी, जब तुम ये सब बातें होती देखो, जान लो कि वह निकट है, द्वार पर ही है।' मत्ती 24:32, 33, हाशिया.

"मसीह ने अपने आने के चिन्ह दिए हैं। वह घोषित करता है कि हम यह जान सकें कि वह कब निकट है, यहाँ तक कि द्वार पर ही है। जो लोग ये चिन्ह देखते हैं, उनके विषय में वह कहता है, 'जब तक ये सब बातें पूरी न हों, यह पीढ़ी कभी न जाएगी।' ये चिन्ह प्रकट हो चुके हैं। अब हमें निश्चित रूप से मालूम है कि प्रभु का आगमन निकट ही है। 'आकाश और पृथ्वी तो टल जाएंगे,' वह कहता है, 'परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।'" The Desire of Ages, 631, 632.

जब पापल रोम द्वारा "यरूशलेम के रौंदे जाने के साढ़े तीन वर्ष" अपने अंत पर थे, तब "चिन्हों" की एक शृंखला प्रकट हुई, जिसने मसीह के आगमन को चिन्हित किया और मिलराइट इतिहास का आरंभ कराया। मिलराइट इतिहास अंतिम दिनों में अक्षरशः दोहराया जाएगा। वे "चिन्ह", जो "महान पापल उत्पीड़न के अंत" पर प्रकट हुए थे, उनकी पूर्वछाया उन "चिन्हों" में दिखाई गई थी जो मूर्तिपूजक (पैगन) रोम द्वारा वर्ष 66 से 70 तक यरूशलेम को साढ़े तीन

वर्षों तक रौंदे जाने के समापन पर प्रकट हुए थे। इसलिए, दो गवाहों के आधार पर, आधुनिक रोम के इतिहास में एक "चिन्ह" होगा—वह "ध्वज" जो महान भूकंप की घड़ी पर ऊँचा किया जाएगा, जो भाग निकलने की चेतावनी का चिन्ह है—और साथ ही बहुवचन में "चिन्ह" भी होंगे, जो अंतिम दिनों में आधुनिक रोम के उत्पीड़न की अवधि के समापन पर घटित होंगे।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

लूका का 21वाँ अध्याय पढ़ें। उसमें मसीह यह चेतावनी देते हैं, 'अपने आप पर ध्यान दो, कहीं ऐसा न हो कि अतिभोजन, पियक्कड़पन और इस जीवन की चिंताओं के कारण तुम्हारे हृदय बोझिल हो जाएँ, और वह दिन तुम पर अचानक आ पड़े। क्योंकि जैसे फंदा, वैसा ही वह समस्त पृथ्वी के ऊपर रहने वालों पर आ पड़ेगा। इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो, कि जो कुछ होने वाला है उससे बच निकलने के योग्य ठहरो, और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े हो सको' (लूका 21:34-36)।

समय के संकेत हमारे संसार में पूरे हो रहे हैं, फिर भी आम तौर पर कलीसियाएँ ऊँघती हुई प्रतीत होती हैं। क्या हम उन मूर्ख कुँवारियों के अनुभव से चेतावनी नहीं लेंगे, जिन्हें जब यह पुकार मिली, 'देखो, दूल्हा आ रहा है; उसके स्वागत के लिए बाहर निकलो,' तब उन्होंने पाया कि उनके दीपकों में तेल नहीं था? और जब वे तेल खरीदने गईं, तो दूल्हा बुद्धिमान कुँवारियों के साथ विवाह-भोज में भीतर चला गया, और द्वार बंद कर दिया गया। जब मूर्ख कुँवारियाँ भोज-भवन तक पहुँचीं, तो उन्हें अप्रत्याशित रूप से मना कर दिया गया। भोज के स्वामी ने कहा, 'मैं तुम्हें नहीं जानता।' वे रात के अँधेरे में, सूनी सड़क पर बाहर खड़ी रह गईं। मैन्युस्क्रिप्ट रितीज़ेस, खंड 15, 229.